

भीतर के पट खोल तोहे पीय मिलेंगे

भक्ति मार्ग में कहते हैं - "रे मन, राम सिमर। राम सिमर बाँवरे। अरे बन्धु, पता नहीं कब यह प्राण पखेरू हो जायेंगे, तू राम सिमर ले। उठ राम सिमर ले।" दूसरे कई भक्त कहते हैं - "हरि बोल, मनुआ मोरे, हरि बोल ! तेरा क्या लगेगा मोल ? तू हरि-हरि बोल। तू गफलत मत कर रे, हरि-हरि बोल।" कई कहते हैं - "तू मुख से कछु न बोल, तू भीतर के पट खोल। भीतर के पट खोल रे प्राणी, तोहे पीय मिलेंगे।" कई कहते हैं - "तोल सके तो तोल, बाबा, मन की आँखें खोल। हीरा जन्म अनमोल, तू मन की आँखें खोल।"

इस प्रकार, कोई हरि बोलने को कहता है, कोई राम, कोई चुप साधने को कहता है और कोई हरि-भजन करने को, परन्तु एक बात तो भक्त और ज्ञानी सभी कहते हैं कि भगवान को याद कर लो। काल सिर पर मँडरा रहा है और पता नहीं कि कब किसकी बारी आ जाय और सब यहीं धरा रह जाय।

हाँ, भक्त यह तो नहीं जानते कि 'राम, कौन है और सत्य सार में 'राम-कहानी, क्या है। उनके पास वह ज्ञान-अंजन भी नहीं है जिससे मन का तीसरा नेत्र खुल जाय। परन्तु इतना तो वे ठीक ही कहते हैं कि - "उठ ! गफलत मत कर रे, हरि को याद कर ले पता नाहिं है यह प्राण कब माटी के इस पिंजरे से पखेरू हो जायेंगे।" वे यह भी ठीक कहते हैं कि - 'यह दुनिया रैन-बसेरा है' न यह घर तेरा है न मेरा है। यह जन्म-जन्म का फेरा है। अब होने वाला सबेरा है, फिर भी तू कर्म कर रहा टेढ़ा है। अरे उठ भाई, काहे को किया बखेरा है। अरे अब जाग मुसाफिर, भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है और फिर रोवत है क्योंकि काल चिड़िया जब चुग जीवन रूपी खेत गयी तब तू जाट खड़ा पछतावत है।,

हाँ, भक्त यह तो नहीं जानते कि अब जो सबेरा होने वाला है, उसमें क्या होगा और वे यह भी नहीं जानते कि यह मुसाफिर आया कहाँ से है और इसे जाना कहाँ है। जिन्हें अब ज्ञान मिला है, उन्हें ही अब यह पता है कि कैसे यह दुनिया मुसाफिरखाना है और उसे दूर, कहाँ दूर जाना है और अब यह

देश हुआ बेगाना है। तब फिर क्यों करता बहाना है ? आखिर मन में क्या ठाना है ?

जब राम अपना काज करके चले जाएंगे तब राम नाम धन कहाँ से मिलेगा ? तब विकर्मों का रावण कैसे जलेगा ? माया मारीच तब कैसे टलेगा ? अतः अरे ज्ञानी भाई, 'बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत। काल चिड़िया चुग रही जीवन रूपी खेत।' यह उक्ति जीवन के



जब राम अपना काज करके चले जाएंगे तब राम नाम धन कहाँ से मिलेगा ? तब विकर्मों का रावण कैसे जलेगा ? माया मारीच तब कैसे टलेगा ? अतः अरे ज्ञानी भाई, 'बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत। काल चिड़िया चुग रही जीवन रूपी खेत।' यह उक्ति जीवन के इस अवसर पर घटती है। परन्तु कोई-कोई ज्ञानी करता क्या है, इस कान से सुनता है और उस कान से निकाल देता है और करवट बदल कर फिर सो जाता है।

इस अवसर पर घटती है। परन्तु कोई-कोई ज्ञानी करता क्या है, इस कान से सुनता है और उस कान से निकाल देता है और करवट बदल कर फिर सो जाता है। भक्ति मार्ग में 'सिमरण' कहा जाता है परन्तु ज्ञान-मार्ग में 'स्मृति'। वास्तव में 'स्मृति' ही से दृष्टि, वृत्ति, स्थिति और कृति बदलती है और नैतिकता तथा आध्यात्मिकता शक्तिशाली होती है। अतः बारम्बार

ईश्वरीय स्मृति ही को धारण करने के लिए निर्देश अथवा उपदेश दिया जाता है परन्तु मनुष्य को विस्मृति का चिरकाल से अभ्यास हो चुका है। वह बार-बार आत्मा के स्वरूप को भूल कर तथा परमपिता परमात्मा को भूल कर देह-अभिमान के गर्त में गिर जाता है। वह 'दास' बनने की आदत के वशीभूत होकर फिर-फिर 'माया-दास' 'इन्द्रिय-दास' 'प्रकृति-दास' 'मनोविकार-दास' बन कर उदास हो जाता है। वह प्रकृति की कान्ति को देखकर भ्रान्ति में पड़कर, शान्ति गँवा कर भ्रान्ति-भ्रान्ति के दुःखों में पड़ जाता है। यह कैसी विडम्बना है कि वह 'प्रभु-प्रभु' कहते हुए भी प्रभु से दूर हटता जाता है, उसे परम पवित्र मान कर भी अपवित्रता की दलदल में पड़ा रहता है, उसे सर्व-महान, भगवान एवं परम बुद्धिमान मानते हुए भी उसकी आज्ञा को टालता है!

परन्तु जो हुआ-सो हुआ। जो बीती सो बीती। अब तो मानव, जाग ! अब तो तेजी से भाग ! अब तो विकारों को त्याग। अब तो छोड़ दे घृणा और राग। अब तो बन बे-दाग। रे मनुआ, अब तो प्रभु से लाग ! तू दूसरों को देखते हुए भी मत देख। उनकी अच्छाई, चतुराई और कमाई को देखकर तू खूश होने की बजाय ईर्ष्या में जा फँसता है। उनकी बुराई, घटताई और लड़ाई को देखकर तू दुःख में भुनता रहता है। कभी हथेली का पारा बनता है, कभी थाली का बैंगन। रे मन, आखिर तेरा ठिकाना कौन सा है। तू या तो बनता खोटा है या बे-पेंदे का लोटा है, या धोबन का सोटा है, या सूखा सड़ियल या किंगकांग-सम मोटा है या बातें करने में चास्कू और चोटा है। अरे, अब छोड़ इन व्यसनो को भी, छोड़ दे प्याज और लहसुन, छोड़ ये भी पान-मसाले, छोड़ ये गुटके। केवल बीड़ी-सिगरेट, शराब-कबाब और प्याज का छौंक ही छोड़ना काफी नहीं बल्कि अब छोड़ नौक-झोंक ये नाजो-अन्दाज, यह चटक-मटक, ये अदा-सदा और अब अपने ठिकाने पर आ। छोड़ इन्हें ओ बेवफा, तब तुझे पीय मिलेंगे। ज्ञान का भी अभिमान छोड़, जवानी के अरमान छोड़, बुरी आदतों के तीर तोड़, गँदगी से मुँह मोड़, अब देख केवल उस ओर। तब तुझे पीय मिलेंगे। (ब्र.कु.जगदीशचंद्र हसीजा)



भरतपुर। हरियाणा के राज्यपाल महामहिम जगन्नाथ पहाड़िया से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु.कविता।



पनवेल (मुम्बई)। ब्र.कु.संतोष आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंच पर हैं ब्र.कु.शिवानी, फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय व ब्र.कु.तारा।



देहरादून। उत्तराखण्ड के मंत्री दिनेश अग्रवाल तथा ब्र.कु.प्रेमलता व्यसन मुक्ति अभियान का शिवध्वज लहराकर शुभारंभ करते हुए।



नीमच। ब्र.कु.भरत, ब्र.कु.किरण, ब्र.कु.आत्मप्रकाश, डीआईजी शेखावत, डी.आई.जी.राठौर तथा ब्र.कु.सुरेन्द्र पत्रिका का विमोचन करते हुए।



दिल्ली (शक्तिनगर)। ब्र.कु.चक्रधारी, दिल्ली शिक्षा प्रभाग की निदेशिका अल्का शर्मा, गोवर जी, डॉ.एम.डी.गुप्ता, रिम्यल गोवर तथा डॉ.मोहित।



कुण्डली (ओ.आर.सी.)। भारत स्वाभिमान ट्रस्ट हरिद्वार के प्रदेशाध्यक्ष परविंदर गुलिया ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.मूर्ति।



मनाली। राजकीय माध्यमिक विद्यालय के 1200 विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रो.ओंकार चंद।